International Journal of Applied Research 2016; 2(10): 174-177

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(10): 174-177
www.allresearchjournal.com
Received: 15-08-2016
Accepted: 18-09-2016

Sunita
Research Scholar (Education)
JJTU, Jhunjhunu
Rajasthan, India.

Correspondence
Sunita
Research Scholar (Education)
JJTU, Jhunjhunu
Rajasthan, India.

'युवाओं के मूल्यों का अध्ययन'

Sunita

सारांश
मूल्यों में आ रही गिरावट के कारण मनुष्य विनाश की ओर बढ़ रहा है। आज समाज में चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है। आधुनिकीकरण की दौड़ में हम अपनी संस्कृति व सभ्यता को कहीं पीछे छोड़ रहे हैं। प्राचीन सांस्कृतिक गौरव की रक्षा के लिए उन मूल्यों को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है, जिनके लिए हम विश्वभर में अपनी पहचान रखते हैं। अतः भारत विश्वभर में मूल्यों के जन्मदाता के रूप में जाना जाता है। इस शोध के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि युवाओं में कौन से मूल्य उच्च स्तर के हैं और कौन से निम्न स्तर के हैं, क्या लिंग व संकाय के आधार पर मूल्यों में विभिन्नता पाई जाती है? इसमें हरियाणा प्रदेश के रेवाड़ी जिले के दस महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को लिया गया है। इसमें 300 छात्र व 300 छात्राओं को संकाय के अनुसार लिया गया है। प्रस्तुत शोध में जी0 पी0 शैरी व आर0 पी वर्मा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग आंकडों का संग्रह करने हेतु किया गया। यह शोध आधुनिकीकरण के कारण युवाओं के मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाता है।

Keywords: युवाओं, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक मूल्यों

प्रस्तावना
यह प्रश्न ही अपने आप में बड़ा मूल्यमान है, क्योंकि मूल्य का विचार ही मनुष्य को उस जीवन दृष्टि की तरफ लेकर जाता है, जो यह दिखाती है कि जीने के लिए किसका महत्व है, और व्यक्ति और समाज के लिए क्या कल्याणकारी है?

लैटिन भाषा के टंसनम शब्द की उत्पत्ति टंसमतम शब्द से हुई है। यह किसी वस्तु की कीमत या उपयोगिता को व्यक्त करता है। इसी प्रकार संस्कृत भाषा में मूल्य शब्द की उत्पत्ति 'इष्ट' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है – वह जो इच्छित है। यदि हम इसे सही अर्थ देना चाहें तो सभी व्यक्ति इस पर एकमत नहीं हैं। मूल्यों पर सबसे अधिक चिन्तन मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने किया है। मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मानव की रूचि पसंद और अभिवृति के साथ जोड़ा है। समाजशास्त्रीय मूल्यों के सम्बन्ध में समाज के आदर्श सिद्वान्त, विश्वास व व्यवहार ही समाज के मूल्य मानते हैं। अतः व्यक्ति की जीवन शैली, क्रियाशैली, क्रियाविधि, विचार तथा अन्य महत्वपूर्ण संदर्भो में मूल्यों का अपेक्षित महत्त्व है। मूल्य वे हैं, जिन्हें व्यक्ति द्वारा किसी भी समय पसन्द किया जाए, सम्मानित किया जाए जिसकी इच्छा की जाए और जिसका अनुमोदन किया जाए। अतः यह कहा जा सकता है कि मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना को प्रकट करता है। यह एक आदर्श या इच्छा है जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति जीवन भर प्रयास करता रहता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि मूल्य मानव व्यवहार के निर्धारक व निर्देशक सिद्वान्त हैं, जो सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न विकल्पों में से चयनित होकर व्यवस्था के अनुरूप कार्य निर्देश देते हैं, तो हम इन्हें मूल्य कहते हैं।

मासंला जी ने कहा है कि व्यक्ति को विटामिन व खनिज लवणों के समान ही जीवन दर्शन व मूल्यों की आवश्यकता है। वह व्यक्ति जिसके मूल्यों को परितृप्ति नहीं होती उसका जीवन निरर्थक होता है।

प्रो0 अर्वन ने अपनी पुस्तक 'फण्डामेंटल ऑफ ऐथिक्स' में लिखा है 'मूल्य वह है जो मानव इच्छा की तृप्ति करे, जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो।

अतः मूल्य वह सत्य है जिसके लिए व्यक्ति जीता है और आवश्यकता पड़ने पर वह संघर्ष करने, दुःख सहन तथा मृत्यु को भी स्वीकार करने के लिए तत्पर रहता है।

मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है। मूल्य प्रत्यय का पहला पद संज्ञानात्मक होता है, दूसरा भावात्मक और तीसरा क्रियात्मक। सबसे पहले मनुष्य अपने समाज के विश्वास, आदर्श, सिद्वान्त, नैतिक नियम और व्यवहार को बिना सोचे समझे अपनाता है

पर जैसे ही उसमें विवेक लौ जागृत होती है, वह इनके औचित्य के बारे में सोचने लगता है। इस सोच के साथ ही उसमें मूल्यों का निर्माण आरम्भ होता है। उसे जो उचित लगता है वह उसकी भावना से जुड़कर वे उसके व्यवहार को प्रभावित करने लगते हैं। अतः यदि ये व्यवहार नहीं कहा जा सकता है। मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को नियन्त्रित व निर्देशित करते हैं। भिन्न–भिन्न समाज, संस्कृति, धर्म राष्ट्रों के मूल्य भी भिन्न –भिन्न होते हैं और मूल्यों से ही प्रत्येक राष्ट्र की पहचान होती है।

शोधकर्त्री ने यह अनुमान किया कि महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों को जानना आवश्यक है। युवाओं को किसी भी राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी माना जाता है, यदि वे ही गलत मार्ग पर अग्रसर हो गए तो उस राष्ट्र का भविष्य ही खतरे में पड़ जाएगा। साथ ही साथ यह जानने की भी आवश्यकता थी कि क्या संकाय और लिंग के आधार पर मूल्यों में विभिन्नता पाई जाती है क्योंकि दोनों लिंग ही समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। अतः इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह शोध किया गया।

शोध के उद्देश्य

1. युवाओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र –छात्राओं के मूल्यों कातुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्रों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कला संकाय व विज्ञान संकाय की छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

वर्तमान अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए इसमें वर्णनात्मक अनुसंधान का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एंव न्यादर्श

उक्त शोध के लिए जनसंख्या हरियाणा राज्य के रेवाड़ी जिले के स्नातक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

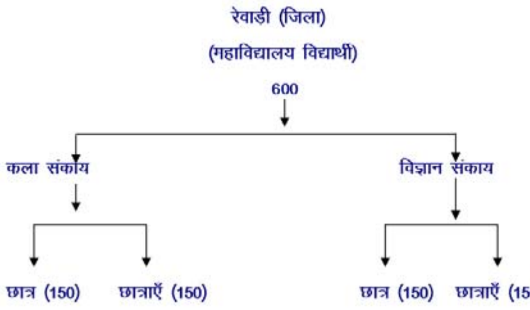

शोध में प्रयुक्त उपकरण

युवाओं में निहित मूल्यों के मापन हेतु डा0 जी0 पी0 शेरी और डा0 आर0 पी0 वर्मा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में 10 मूल्यों का समावेश है

धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखात्मक मूल्य, शक्ति संबंधी मूल्य, पारिवारिक प्रतिष्ठा संबंधी मूल्य और स्वास्थ्य संबंधी मूल्य।

आंकडों का विश्लेषण

आंकडों के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

1 मध्यमान
2 मानक विचलन
3 "टी" मूल्य।

H_1छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1: छात्र–छात्राओं में मूल्यों की तालिका

मूल्य	छात्र		छात्राएँ		टी मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
धार्मिक	11.65	3.96	12.21	3.88	1.80	स्वीकृत
सामाजिक	14.21	3.39	14.20	3.32	0.03	स्वीकृत
लोकतांत्रिक	14.65	3.16	15	3.31	1.34	स्वीकृत
सौंदर्यात्मक	10.9	3	11.24	3.18	1.36	स्वीकृत
आर्थिक	9.35	3.31	8.51	3.12	3.23	अस्वीकृत
ज्ञानात्मक	13.06	3.38	14.97	3.12	4.26	अस्वीकृत
सुखवादी	11.06	2.93	10.22	3.03	3.5	अस्वीकृत
शक्ति	9.70	3.09	8.56	2.81	4.95	अस्वीकृत
पारिवारिक	13.69	4.46	13.65	3.74	0.12	स्वीकृत
स्वास्थ्य मूल्य	10.69	3.41	11.35	3.17	2.53	0.05 के मान पर अस्वीकृत 0.01 के मान पर स्वीकृत

तालिका के मान के अनुसार 0.05 पर 1.96 व 0.01 पर 2.58 के अनुसार उपर्युक्त तालिका के आधार पर छात्र–छात्राओं के धार्मिक, सामाजिक, लोकतांत्रिक, सौंदर्यात्मक, पारिवारिक व स्वास्थ्य मूल्यों में कोई अन्तर नहीं हैं। लेकिन आर्थिक, ज्ञानात्मक, सुखवादी व शक्ति मूल्यों में अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_2 कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तलिका 2: कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र छात्राओं के मूल्यों का वितरण

मूल्य	कला संकाय		विज्ञान संकाय		(टी) मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
धार्मिक	12.18	3.78	11.69	4.05	3.28	अस्वीकृत
सामाजिक	14.11	3.45	14.31	3.26	0.74	स्वीकृत
लोकतांत्रिक	14.50	3.32	15.14	3.12	2.46	0.05 के मान पर अस्वीकृत व 0.01 के मान पर स्वीकृत
सौन्दर्यात्मक	10.83	3.21	11.30	2.95	0.01	स्वीकृत
आर्थिक	9.31	3.09	8.55	3.36	2.92	अस्वीकृत
ज्ञानात्मक	14.21	3.31	14.71	3.27	2.21	0.05 के स्तर पर अस्वीकृत व 0.01 के स्तर पर स्वीकृत
सुखवादी	10.64	2.94	10.64	3.08	0	स्वीकृत
शक्ति	9.21	3.16	9.06	2.86	0.62	स्वीकृत
पारिवारिक	14.09	4.10	13.25	4.09	2.51	0.05 के स्तर पर अस्वीकृत व 0.01 के स्तर पर स्वीकृत
स्वास्थ्य मूल्य	10.90	3.53	11.14	3.07	0.92	स्वीकृत

उपर्युक्त तालिका के आधार पर स्पष्ट है कि कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं के सामाजिक, लोकतांत्रिक, सौंदर्यात्मक, ज्ञानात्मक, सुखवादी, शक्ति, पारिवारिक व स्वास्थ्य मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, लेकिन धार्मिक व आर्थिक मूल्यों में कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं में अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_3 कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्रों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तलिका 3: कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं के मूल्यों की तालिका

मूल्य	कला संकाय की छात्राएँ		विज्ञान संकाय की छात्राएं		(टी) मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
धार्मिक	11.33	3.74	11.97	4.15	1.42	स्वीकृत
सामाजिक	14.02	3.41	14.40	3.37	1	स्वीकृत
लोकतांत्रिक	14.42	3.51	14.88	3.17	1.26	स्वीकृत
सौन्दर्यात्मक	10.48	2.89	11.31	3.05	2.44	0.05 के स्तर पर अस्वीकृत व 0.01 पर स्वीकृत
आर्थिक	9.96	3.14	8.74	3.38	3.29	अस्वीकृत
ज्ञानात्मक	13.67	3.24	14.04	3.51	.97	स्वीकृत
सुखवादी	11.14	3.00	10.98	2.86	0.48	स्वीकृत
शक्ति	9.93	3.170	9.47	3.02	1.31	स्वीकृत
पारिवारिक	14.320	4.53	13.17	4.34	2.01	0.05 के स्तर पर अस्वीकृत व 0.01 पर स्वीकृत
स्वास्थ्य मूल्य	10.55	3.88	10.84	2.88	0.74	स्वीकृत

इस तालिका के आधार पर कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्रों में धार्मिक, सामाजिक, लोकतांत्रिक, सौन्दर्यात्मक, धार्मिक, ज्ञानात्मक, सुखवादी, शक्ति, पारिवारिक व स्वास्थ्य मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। लेकिन कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्रों के आर्थिक मूल्यों में अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_4 कला संकाय व विज्ञान संकाय की छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तलिका 4: कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं के मूल्यों की तालिका

मूल्य	कला संकाय की छात्राएँ		विज्ञान संकाय की छात्राएं		(टी) मूल्य	परिणाम
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
धार्मिक	13.02	3.65	11.40	3.95	3.76	अस्वीकृत
सामाजिक	14.2	3.49	14.21	3.15	0.01	स्वीकृत
लोकतांत्रिक	14.58	3.50	15.41	3.06	2.24	0.05 के स्तर पर अस्वीकृत व 0.01 के स्तर पर स्वीकृत
सौन्दर्यात्मक	11.18	3.48	11.3	2.86	0.33	स्वीकृत
आर्थिक	8.66	2.89	8.35	3.33	0.88	स्वीकृत
ज्ञानात्मक	14.56	3.32	15.37	2.86	2.31	0.05 के स्तर पर अस्वीकृत व 0.01 के स्तर पर स्वीकृत
सुखवादी	10.14	2.79	10.30	3.26	0.47	स्वीकृत
शक्ति	8.48	2.99	8.64	2.64	0.5	स्वीकृत
पारिवारिक	13.97	3.63	13.32	3.84	1.51	स्वीकृत
स्वास्थ्य मूल्य	11.25	3.11	11.45	3.23	0.55	स्वीकृत

सार्थकता स्तर पर सार्थक 0.05 पर मान 1.96 एवं0.01 पर मान 2.58 है।

उपर्युक्त तालिका के आधार पर कला संकाय व विज्ञान संकाय की छात्राओं के सामाजिक लोकतांत्रिक, सौदंर्यात्मक, धार्मिक, सामाजिक, ज्ञानात्क, सुखवादी, शक्ति, पारिवारिक व स्वास्थ्य मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। केवल धार्मिक मूल्यों में कला संकाय व विज्ञान संकाय की छात्राओं मे अंतर पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिणाम एवं व्याख्या

1. प्रस्तुत शोध के परिणाम दर्शाते हैं कि छात्र–छात्राओं में लोकतांत्रिक, सामाजिक और पारिवारिक प्रतिष्ठा के मूल्य उच्च स्तर के पाए गए हैं। अतः युवावर्ग लोकतांत्रिक मूल्यों को सबसे अधिक महत्त्व देते हैं। ये बिना किसी भेदभाव के स्वतंत्र विकास और जीवनयापन को महत्त्व देते हैं। ये सभी अपनी सामाजिकता को बढ़ावा देते हुए सामाजिक बनना चाहते हैं। तथा समाज में अपने परिवार की प्रतिष्ठा पारिवारिक स्तर को ऊँचा उठाना, परिवार के मान मर्यादा को बनाए रखना चाहते हैं।
2. कला संकाय व विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं में धार्मिक व आर्थिक मूल्यों में अन्तर पाया गया है। कला संकाय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। निम्न बौद्धिक स्तर वाले छात्र अधिक धार्मिक होते हैं, जबकि उच्च बौद्धिक स्तर वाले छात्र तार्किकता, सामाजिकता, सत्ता प्राप्त करके प्रतिष्ठा प्राप्त करने को अधिक महत्व देते हैं। कला संकाय के विद्यार्थी आर्थिक रूप से धन अर्जन करने को ज्यादा महत्व देते हैं, क्योंकि ये धन को जीवन की प्रगति का आधार मानते हैं।
3. छात्र–छात्राओं के ज्ञानात्मक, सुखात्मक व शक्ति मूल्यों में भी अन्तर पाया गया। लड़कियों लड़कों की अपेक्षा ज्ञान को अधिक महत्व देती है, लेकिन उनका ज्ञान पुस्तकों पर अधिक आधारित है। इसके विपरित लड़के सुखात्मक व शक्ति मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं। वे अपने परिवार व समाज में अपनी सत्ता व शक्ति जमाना चाहते हैं। अतः लड़के दूसरों पर शासन करने व दूसरों का प्रतिनिधित्व करने के अधिक इच्छुक हैं।
4. छात्र–छात्राओं के कलात्मक मूल्य व स्वास्थ्य संबंधी मूल्यों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः चित्रकला, पेंटिग, संगीत, नृत्य, कविता, साहित्य व साफ–सफाई की व्यवस्था तथा स्वास्थ्य के प्रति स्वस्थ तथा सकारात्मक दृष्टिकोण भी लिंग द्वारा प्रभावित नहीं होता।

शैक्षिक सुझावः 'व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के माध्यम से मूल्यों को विकसित किया जाए, क्योंकि परिवर्तन केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है, इसलिए मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका से इन्कार नहीं किया जा सकता है। अतः मूल्य शिक्षा दिए जाने पर अत्यधिक बल दिया जाना चाहिए। तथा पाठ्यक्रम में मूल्यों सम्बन्धित विषय को लागू करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ

1. तंवर निधि जीवन मूल्यों के प्रति अनास्थाः कारण और निवारण, 2013, वर्ष 57, अंक 2 फरवरी– मार्च।
2. बोहरा सुनीता उच्च माध्यामिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रोढ़ शिक्षा, वर्ष, 2009, 53, अंक 4, नवम्बर।
3. साइनी मधु माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन परिप्रेक्ष्य, वर्ष, 2009, 16, अंक 2, अगस्त।
4. शर्मा आर0 ए0 तत्वमीमांसा ज्ञान मीमांसा, मूल्यमीमांसा एवं शिक्षा, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, 2008।
5. सक्सैना एन0 आर0 स्वरूप शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2008।
6. गुप्ता रेनू उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा जगदम्बा बुक सैंटर, अंसारी रोड़, नई दिल्ली, 2007।
7. त्यागी गुरसरनदास शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2007।
8. पाण्डेय रामशक्ल व मिश्रा करूणा शंकर मूल्य शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2004।
9. शैरी जे0 पी0 एवं वर्मा आर0 पी0 माध्यामिक स्कूलों के छात्रों में लोकप्रिय तथा अलोकप्रिय अध्यापकों की मूल्य व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन ए रिसर्च जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइक्लोजी, वाल्यूम, 2001, 4।